श्रीमन्महर्षिकृष्णद्वैपायनव्यासविरचितम्

# पद्मपुराणम्

## सृष्टिखण्डात्मकः

प्रथमो भागः

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

चौखम्बा संस्कृत सीरीज
१२४

***

श्रीमन्महर्षिकृष्णद्वैपायनव्यासविरचितम्

# पद्मपुराणम्

सृष्टिखण्डात्मकः
प्रथमो भागः

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयम्भैरवम् ।
सिद्धौघं बटुकत्रयम्पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम् (शाम्भवम्) ॥
वीरान्द्व्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकम् ।
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

तारा को गुरु के लिये अर्पण करो तदनन्तर तारा का बृहस्पति के पास गमन एवं रुद्र का स्वस्थान गमन। तारा के गर्भ से बुध की उत्पत्ति। पुत्रोत्सव में ब्रह्मादि देवताओं का गुरु गृह गमन। देवों ने पूछा यह किसका पुत्र है लज्जित तारा ने चन्द्रमा का है ऐसा उत्तर दिया। बुध का चन्द्र के पास गमन। बुध के इला के गर्भ से पुरूरवा नामक पुत्र की उत्पत्ति। पुरूरवा के आख्यान का वर्णन पुरूरवा के उर्वशी के गर्भ से आयु, दृढ़ायु, वश्यायु, बलायु, धृतिमान, वसु, दिव्यजायु और शतायु नामक आठ पुत्र हुये आयु के नहुष, वृद्धशर्मा, रजि, दण्ड और विशाख ये पांच पुत्र हुये। "रजि के सौ पुत्र हुये वे राजेय कहलाये। रजि ने विष्णु की आराधना की वरदान में विष्णु ने देव, असुर और मनुष्यों में विजयी बनो ऐसा कहा। प्रह्लाद एवं इन्द्र का युद्ध। देवासुरों ने ब्रह्मा से पूछा कि इन दोनों में विजयी कौन होगा ब्रह्माजी ने कहा रजि जिस तरफ होगा उसकी विजय होगी। देवों ने रजि से प्रार्थना की रजिने इन्द्र के शत्रुओं को मार दिया इस कर्म से इन्द्र रजि का पुत्र हो गया। इन्द्र को राज्य दे रजि का तपस्या के लिये जाना। रजि पुत्रों द्वारा बलात्कार से इन्द्र राज्य का अपहरण। इन्द्र की बृहस्पति के साथ मन्त्रणा। बृहस्पति द्वारा रजि पुत्रों को जिन धर्म का उपदेश कर मोहित करना। इन्द्र द्वारा उनकी मृत्यु। नहुष के सात पुत्रों का वर्णन। नहुष पुत्र ययाति के दो रानियां थीं शुक्रपुत्री देवयानी एवं वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा। देवयानी के यदु एवं तुर्वसु और शर्मिष्ठा के द्रुह्यु, अनु और पूरु नामक पुत्र हुये। पूरु के वंश का वर्णन। कार्तवीर्य के आख्यान का वर्णन। कार्तवीर्य ने दत्तात्रेय की आराधना कर हजार भुजाओं को प्राप्त किया। उसने बहुत दक्षिणावाले बहुत यज्ञ किये। उसके यज्ञ में नारद द्वारा गाथा का गान। जिसने रावण को मोहित कर माहिष्मती में बांध दिया था तब मैंने (पुलस्त्य) उसे छुड़वाया। जिसको वशिष्ठजी ने शाप दिया था कि जैसे मेरे वन को तुमने नष्ट किया है वैसे ही तुम्हारा दुष्कृत कर्म को अन्य कोई नष्ट करेगा तथा तपस्वी



ब्राह्मण तुम्हें नष्ट करेगा। परशुरामजी द्वारा उसकी मृत्यु। कार्त्तवीर्य के सौ पुत्र थे परन्तु उनमें पांच ही महारथी थे। कार्तवीर्य का प्रातःकाल स्मरण करने से वित्त नाश नहीं होता एवं नष्ट हुआ धन प्राप्त हो जाता है।

१३ क्रोष्टुवंशविस्तारवर्णनम् ७५
वंशानुवंशस्थस्त्रीपुरुषाणां संक्षिप्तचरित्रम् ७७
स्यमन्तकमणिसंक्षिप्तचरित्रम् ७९
देवक्यां कृष्णोत्पत्तिवर्णनम् ८१
भगवदवतारकारणवर्णनम् ८३
शुक्रतपश्चर्यावर्णनम् ८५
भृगुणा विष्णवे शापदानम् ८७
बृहस्पतिना शुक्रवेषेण दैत्यमोहनम् ८९
गुरुणा दैत्यान्प्रति धर्मभ्रंशकरोपदेशदानम् ९१
गुरुणा दिगम्बरजैनधर्मदीक्षादानम् ९३

पुलस्त्यजी ने कहा हे राजेन्द्र! क्रोष्टु के वंश का चरित्र श्रवण करो जिसमें साक्षात् विष्णु भगवान् अवतरित हुये हैं। क्रोष्टु के वृजिनीवान् नामक पुत्र हुआ उसके स्वाति उसके कुशंकु नामक पुत्र हुआ। कुशंकु के वंश का वर्णन। ज्यामघ के आख्यान का वर्णन। इसी वंश में बभ्रु (देवावृध) के आख्यान का कथन। देवावृध के महातेजा भोज उसके कुकुर, भजमान, श्याम एवं कम्बलबर्हिष नामक पुत्र हुये। कुकुर के वंश का वर्णन। राजा आहुक के उग्रसेन एवं देवक दो पुत्र हुये। देवक के देववान्, उपदेव, सुदेव, देवरक्षित नामक पुत्र एवं देवकी, श्रुतदेवा, यशोदा, श्रुतिश्रवा, श्रीदेवा, उपदेवा और सुरूपा ये सात कन्यायें हुईं।

उग्रसेन से कंस, सुनामा, न्यग्रोध, कङ्क, शङ्कु, सुभ्रू, राष्ट्रपाल, बद्धमुष्टि, समुष्टि ये नौ पुत्र एवं कंसा, कंसवती, सुरी, राष्ट्रपाली और कङ्का पांचपुत्रियां हुईं। भजमान के वंश का वर्णन। अन्धकों के वंश का कीर्त्तन करने से विपुल वंश की प्राप्ति होती है। क्रोष्टु के गान्धारी एवं माद्री दो स्त्रियां थीं। गान्धारी के सुमित्र एवं माद्री के युधाजित उसके देवमीढुष एवं अनमित्र, अनमित्र के निम्न पुत्र उसके प्रसेन एवं शक्तिसेन दो पुत्र हुये। प्रसेन के पास स्यमन्तक नामक मणिरत्न था। कृष्ण ने मणि रत्न को उग्रसेन के लिये मांगा उसने नहीं दिया। एक समय प्रसेन उस मणि को धारण कर शिकार खेलने गया। प्रसेन ने बिल में किसी प्राणी का शब्द सुना। प्रसेन एवं जाम्बवान् का युद्ध एवं जाम्बवान् द्वारा प्रसेन की मृत्यु। सत्राजित् ने यादवों से कहा मणि के कारण प्रसेन मारा गया है श्रीकृष्ण ने प्रसेन को मारकर मणि ग्रहण की है। बहुत दिन के बाद श्रीकृष्ण भी अपनी इच्छा से उसी वनमें गये वहां यथापूर्व शब्द सुनाई दिया। श्रीकृष्ण का जाम्बवान् के बिल में प्रवेश। क्रोधित कृष्ण का जाम्बवान् को पकड़ना। जाम्बवान् ने विष्णु को पहिचान विष्णुसूक्त से स्तुति की। जाम्बवान् ने कहा कि आपके हाथ से मेरी मृत्यु अति उत्तम है इस कन्या को मणि सहित ग्रहण करें यह मणि प्रसेन को मारकर मैंने हस्तगत की है। श्रीकृष्ण ने ऋक्षराजकी मुक्ति कर मणि सहित कन्या को ग्रहण कर सम्पूर्ण वार्ता यादवों से कही और मणि को सत्राजित के लिये अर्पण कर दिया। यादवों ने कहा हमारे मन में ऐसा था कि श्रीकृष्ण ने प्रसेन को मारकर मणि ली है। सत्राजित के सन्तानों का वर्णन। वृष्णिवंश में विख्यात अनमित्र के वंश का वर्णन। जो पुरुष श्रीकृष्ण के इस मिथ्या कलङ्क को जानता है वह मिथ्या कलङ्क का भागी नहीं होता है। मीढुष के वंश का वर्णन। मीढुष के सर्वप्रथम वसुदेव हुये तब आकाश में नगारे बजे इससे उसका नाम आनकदुन्दुभि हुआ। मीढुष के अन्य नौ पुत्र एवं श्रुतकीर्ति, पृथा, श्रुतदेवी, श्रुतश्रवा और राजाधिदेवी ये पांच पुत्रियां हुईं। श्रुतदेवी के कारूष, श्रुतिकीर्त्ति के



सन्तर्दन, श्रुतश्रवा के सुनीथ एवं राजाधिदेवी की शूरवीर पुत्र उत्पन्न हुआ। शूर एवं कुन्तीभोज की मित्रता थी अतः पृथा को कुन्तिभोज के लिये पुत्रीरूप में समर्पित किया। कुन्तिभोज ने कुन्ती को पाण्डु के लिये दिया। पाण्डु को शाप लगने के कारण कुन्ती के धर्म, वायु एवं इन्द्र के अंश से युधिष्ठिर, भीम वअर्जुन पुत्र हुये। माद्री के अश्विनीकुमारों के अंश से नकुल और सहदेव हुये। वसुदेव के देवकी के गर्भ से साक्षात् श्रीकृष्ण पैदा हुये। श्रीकृष्ण के चतुर्भुज रूप को देखकर वसुदेव ने कहा आप शिशु रूप को ही धारण कीजिये मैं कंस से डरता हूं मेरे छः पुत्र कंस ने मार दिये हैं इतना सुनकर श्रीकृष्ण ने चतुर्भुज रूप का संहार कर लिया। वसुदेव ने श्रीकृष्ण को नन्दगोप के लिये अर्पण कर कहा इसकी रक्षा करो इससे सम्पूर्ण यादवों का कल्याण होगा यह कंस को मारेगा तथा और भी दुष्ट राजाओं का नाश करेगा। अर्जुन का सारथी बनकर कौरवों का संहार करेगा अन्त में यदुकुल को देवलोक पहुंचायेगा।

भीष्मजी ने पूछा वसुदेव, देवकी, नन्द एवं यशोदा कौन थे? पुलस्त्यजी बोले वसुदेव कश्यप के अंश से एवं देवकी अदिति के अंश से तथा द्रोण के अंश से नन्द व धरा के अंश से यशोदा उत्पन्न हुई। देवकी ने पूर्वजन्म में जो-जो वरदान मांगे थे उनकी पूर्त्ति के लिये भगवान् श्रीकृष्ण ने अवतार लिया। श्रीकृष्ण के रुक्मिणी आदि आठ पट्टमहिषी (पटरानी) एवं १६ हजार रानियां थीं। श्रीकृष्ण के सन्तानों का वर्णन। सम्पूर्ण यादवों का देवों के अंशों से उत्पन्न होने का वर्णन।

भीष्मजी ने पूछा कि सप्तर्षि, कुबेर, सात्यकि, नारद, यक्ष, मणिधर, शिव एवं धन्वन्तरि के साथ आदि देव विष्णु का पृथ्वीतल में उत्पन्न होने का कारण बतलाइये तथा वृष्णिकुल में उत्पन्न होने का भी उद्देश्य क्या था वह भी वर्णन कीजिये।

पुलस्त्यजी ने कहा युगान्त में समय के शिथिल होनेपर विष्णु स्वयं देव, असुर एवं मनुष्यों में अवतरित होते हैं। हिरण्यकशिपु के बाद बलि त्रिलोकी का राज्य

करने लगा। वामन द्वारा बलि का बन्धन होने से देवासुरों का परस्पर युद्ध। देवासुरों के निमित्त विष्णु को भृगु का शाप। भीष्मजी ने देवासुरों के निमित्त भगवान् की उत्पत्ति का कारण पूछा तब पुलस्त्यजी बोले मन्वन्तर में द्वादश अवतारों का वर्णन संक्षेप में कहता हूं।

प्रथमो नारसिंहस्तु द्वितीश्चाऽपि वामनः।
तृतीयस्तु वराहश्च चतुर्थोऽमृतमन्थनः॥
संग्रामः पञ्चमश्चैव सुघोरस्तारकामयः।
षष्ठो ह्याडीबकाख्यश्च सप्तमस्त्रैपुरस्तथा॥
अष्टमश्चान्धकवधो नवमो वृत्रघातनः।
ध्वजश्च दशमस्तेषां हालाहलस्ततः परम्॥
प्रथितो द्वादशस्तेषां घोरः कोलाहलस्तथा।

देव एवं दानवों का भीषण संग्राम। दैत्यों को पराजित देख उनकी रक्षार्थ शुक्र की तपस्या करना। इसी बीच देवों ने दैत्यों के साथ बहुत युद्ध किया। दुःखित दैत्यों ने देवों से कहा हम न्यस्त शस्त्र हैं गुरु शुक्राचार्य जबतक नहीं आयेंगे तबतक नहीं लड़ेंगे अन्ततो गत्वा देवों ने स्वीकार नहीं किया तब दैत्यों ने काव्य की माता की शरण ली। माता ने उन्हें अभयदान दिया फिर भी देवों ने बलात्कार से युद्ध किया। काव्य-माता ने क्रोधपूवक कहा मैं तपोबल से सबको नष्ट कर दूंगी। तदनन्तर इन्द्र के आदेश से विष्णु द्वारा शुक्रमाता का बध। भृगु का विष्णु को शाप कि तुमने अवध्या स्त्री का वध किया है अतः सात जन्म तक मनुष्य योनि में जन्म लेना होगा। भृगु द्वारा माता को मन्त्र बल से जीवदान। तपस्या पूर्ण होनेपर शुक्र को महादेव का वरदान। शुक्र का जयन्ती के साथ सौ वर्ष तक अदृश्य रूप में सहवास। बृहस्पति का शुक्र वेष से दैत्यों को मोहित करना। अवधि समाप्ति के बाद शुकाचार्य का शिष्यों के पास आगमन। वहां शुक्ररूप गुरु को देखकर कहा हे ब्रह्मन्! यह कार्य उत्तम नहीं है जो आप



मेरे शिष्यों को मोहितकर उपदेश करते हो। गुरु ने कहा संसार में परद्रव्य हरनेवाले तो देखे गये हैं परन्तु शरीर को हरनेवाले नहीं। इस प्रकार दोनों का विवाद। शुक्र का दानवों को शाप। बहुत दिन के बाद दानवों ने गुरु से कहा कि यह संसार असार है कुछ ज्ञानोपदेश कीजिये जिससे मोक्ष मिले। शुक्ररूपी गुरु द्वारा दैत्यों को धर्म नष्ट करनेवाला उपदेश। मायामोहित दैत्यों ने कहा हे गुरो! हमें दीक्षा दीजिये इस संसार से हम विरक्त हो गये हैं आपही की शरण में हैं। तब गुरु ने विचार किया कि इन्हें किस तरह से नरक का मार्ग दिखाया जावे। गुरु ने विष्णु का ध्यान किया विष्णु ने कहा यह मायामोह अखिल दैत्यों को नष्ट करेगा इतना कहकर विष्णु का अन्तर्ध्यान। तपस्या में लगे हुये दैत्यों के पास मायामोह का आगमन। बृहस्पति ने कहा आपलोगों की भक्ति से प्रसन्न हो योगिराज दिगम्बर मुण्ड एवं मयूरपत्र को धारण करनेवाले आये हैं। मायामोह ने कहा तुम्हारी तपस्या ऐहिक फल प्राप्ति के लिये है अथवा पारलौकिक फल के लिये? दानवों ने कहा हमारी तपस्या पारलौकिक फल प्राप्ति के लिये है। दिगम्बर ने कहा यदि मुक्ति की इच्छा करते हो तो मेरे वचनों का पालन करो। बौद्धधर्म सबसे उत्तम है एवं मुक्ति का मार्ग है। इस प्रकार वेद वहिष्कृत कर्मों का उपदेश कर दैत्यों को मुक्तिमार्ग से वञ्चित करना। दिगम्बर ने कहा यही मार्ग दिगम्बरों एवं श्वेताम्बरों का है। मायामोह द्वारा दैत्यों को अन्य बहुत-से दिगम्बर जैन धर्मों का उपदेश। मायामोह ने दैत्यों से कहा यह गुरु आपलोगों को दीक्षा देंगे। दैत्यों ने गुरु से कहा हमें संसार से मोक्ष पानेवाली दीक्षा दीजिये। गुरुजी बोले नर्मदा तटपर वस्त्र त्यागकर ठहरो दीक्षा दूंगा। तदनन्तर दैत्यों को दिगम्बर एवं मुण्डित कर परम धर्म (जैनधर्म) का उपदेश कर कहा अन्य देव को प्रणाम नहीं करना चाहिये इस प्रकार उपदेश कर गुरु बृहस्पति का स्वर्गलोक में गमन। बृहस्पति ने सम्पूर्ण बात इन्द्र से कह सुनाई। इन्द्र ने प्रह्लाद से रहित नमुचि आदि दानवों को

सुघोरामापदंप्राप्तानचिरादेवसर्वशः । एवमुक्त्वागतःकाव्योयदृच्छातस्तपोवनम् ॥३०९॥
तस्मिन्गतेततःशुक्रेस्थितस्तत्रबृहस्पतिः । पालयन्दानवांस्तत्रकिंचित्कालमतिष्ठत ॥३१०॥
ततोबहुतिथेकाले अतिक्रांतेनरेश्वर । संभूयदानवाःसर्वेपर्यपृच्छंस्तदागुरुम् ॥ ३११ ॥
संसारेऽस्मिन्नसारेतुकिंचिज्ज्ञानंप्रयच्छ नः । येनमोक्षंव्रजामश्चप्रसादात्तवसुव्रत ॥३१२॥
ततःसुरगुरुः ... हकाव्यरूपीतदागुरुः । ममाप्येषामतिः पूर्वं या युष्माभिरुदाहृता ॥३१३॥
क्षणंकुर्वन्तु ... हेताश्शुचीभूयसमाहिताः । ज्ञानंवक्ष्यामिवोदैत्याअहंवैमोक्षदायियत् ॥
एषाश्रुतिर्वै ... दीयाऋग्यजुःसामसंज्ञिता । वैश्वानरप्रसादात्तुदुःखदाप्राणिनामिह ॥३१५॥
यज्ञश्राद्धं ... द्रैरैहिकस्वार्थतत्परैः । येत्वमीवैष्णवाधर्मायेच रुद्रकृतास्तथा ॥३१६॥
कुधर्मादार ... तैर्हिंसाप्राया कृताहितैः । अर्द्धनारीश्वरोरुद्रःकथंमोक्षंगमिष्यति ॥३१७॥
वृतोभूतगणैः ... रैर्भूषितश्चास्थिभिस्तथा । नस्वर्गोनैवमोक्षोऽत्रलोकाःक्लिश्यंतिवैतथा ॥
हिंसायामा ... तोविष्णुःकथंमोक्षंगमिष्यति । रजोगुणात्मकोब्रह्मास्वांसृष्टिमुपजीवति ॥
देवर्षयोऽथ ... न्येवैदिकंपक्षमाश्रिताः । हिंसाप्रायाः सदाक्रूरामांसादाः पापकारिणः ॥
सुरास्तुमद्य ... नेनमांसादाब्राह्मणास्त्वमी । धर्मेणानेनकःस्वर्गंकथंमोक्षंगमिष्यति ॥३२१॥
यच्चयज्ञादिक ... मे स्मार्तंश्राद्धादिकंतथा । तत्रनैवापवर्गोऽस्तियत्रैषाश्रूयतेश्रुतिः ॥३२२॥
यज्ञंकृत्वापशुं ... त्वाकृत्वारुधिरकर्दमम् । यद्येवंगम्यतेस्वर्गोनरकः केन गम्यते ॥३२३॥
यदिभुक्तमिह ... येनतृप्तिरन्यस्यजायते । दद्यात्प्रवसतः श्राद्धं न सभोजनमाहरेत् ॥३२४॥
आकाशगामि ... ोविप्राःपतितामांसभक्षणात् । तेषां न विद्यतेस्वर्गोमोक्षोनैवेहदानवाः ॥
जातस्यजीवि ... जंतोरिष्टंसर्वस्यजायते । आत्ममांसोपमं मांसं कथं खादेत पंडितः ३२६॥
योनिजास्तुब ... योनिंसेवंते जंतवस्त्वमी । मैथुनेन कथं स्वर्गं यास्यंते दानवेश्वर ॥
मृद्भस्मना यत्र शुद्धिस्तत्रशुद्धिस्तु का भवेत् ॥ ३२७ ॥
विपरीततमं ... कंपश्यदानव यादृशम् । विण्मूत्रस्य कृतोत्सर्गेशिश्नापानेतुशोधनम् ॥
नसंभारोऽस्ति ... दनेमृदातोयेनवापुनः । भुक्त्वाभोजनेराजन्कथंनापानशिश्नयोः ॥३२९
क्रियतेशोधनं ... दृद्विपरीतास्थितिस्त्वियम् । यत्र प्रक्षालनं प्रोक्तं तत्रतेनैवकुर्वते ॥३३०॥
तारांबृहस्पते ... र्यां हृत्वासोमःपुरागतः । तस्यांजातोबुधःपुत्रोगुरुर्जग्राहतांपुनः ॥३३१॥



गौतमस्यमुनेःपत्नीमहल्यांनामनामतः । अगृह्णात्तांस्वयंशक्रःपश्यधर्मोयथाविधः ॥३३२॥
एतदन्यच्चजगतिदृश्यते पापदायकम् । एवंविधो यत्र धर्मः परमार्थोमतस्तुकः ॥३३३॥
शृणुस्व त्वं दानवेंद्र वद भूयो वदामि ते । गुरोस्तुगदितंश्रुत्वापरमार्थान्वितंवचः ३३४
जातकौतूहलास्तत्र विविक्तास्तु भवार्णवात् ।

दानवा ऊचुः ।

दीक्षयस्व गुरो सर्वान्प्रपन्नान्भक्तितः स्थितान् ॥ ३३५ ॥
नवैन पुनर्मोहंव्रजामस्तवशासनात् । सुविरक्ताःस्मसंसारेशोकमोहप्रदायिनि ॥३३६॥
उद्धरस्व गुरो सर्वान्केशाकर्षेणकृपतः । कस्य देवस्य शरणंगच्छामोब्राह्मणोत्तम ॥३३७॥
धृतं च प्रपन्नानांप्रकाशयमहामते । स्मरणेनोपवासेन ध्यानधारणया तथा ॥३३८॥
...ोपहारैश्चकृते अपवर्गस्तुलभ्यते । विरक्तास्स्मकुटुंबेतुभूयोनात्रयतामहे । ३३९ ॥
वंचैवगुरुश्छन्नस्तैरुक्तोदनुपुंगवैः । चिंतयामासतत्कार्यंकथमेतत्करोम्यहम् । ३४० ॥
...थमेतेमयापापाःकर्तव्यानरकौकसः । विडंबनाच्छ्रुतेर्बाह्यास्त्रैलोक्येहास्यकारिणः ॥
...युक्त्वाधिपणोराजंश्चिंतयामासकेशवम् । तस्यतच्चिंतितंज्ञात्वामायामोहंजनार्दनः ॥
...मुत्पाद्यददौतस्यप्राहचेदंबृहस्पतिम् । मायामोहोऽयमखिलांस्तान्दैत्यान्मोहयिष्यति ॥
...तासहितःसर्वान्वेदमार्गबहिष्कृतान् । एवमादिश्य भगवानंतर्धानंजगामह ॥३४४॥
...स्यभिरतान्सोऽथमायामोहोगतोऽसुरान् । तेषांसमीपमागत्यबृहस्पतिरुवाचह ३४५॥
...हार्थंयुष्माकंभक्त्याप्रीतस्त्विहागतः । योगीदिगम्बरोमुण्डोबर्हिपत्रधरोह्ययम् ३४६
...युक्तेगुरुणापश्चान्मायामोहोऽब्रवीद्वचः । भो भो दैत्याधिपतयः प्रब्रूततपसिस्थिताः ॥
ऐहिकार्थं तु पारक्यं तपसःफलमिच्छथ ।

दानवा ऊचुः ।

पारक्यधर्मलाभाय तपश्चर्या हि नो मता ॥ ३४८ ॥
अस्माभिरियमारब्धा किं वा तत्र विवक्षितम् ।

दिगंबर उवाच ।

कुरुध्वं मम वाक्यानि यदि मुक्तिमभीप्सथ ॥ ३४९ ॥

आर्हतं सर्वमेतच्च मुक्तिद्वारमसंवृतम् । धर्माद्विमुक्तेरर्होऽयं नैतस्मादपरः परः ॥ ३५० ॥
अत्रैवावस्थिताःस्वर्गं मुक्तिंचापि गमिष्यथ । एवं कार्यैर्बहुभिर्मुक्तिदर्शनवर्जितैः ॥३५१॥
मायामोहेन ते दैत्या वेदमार्गबहिष्कृताः । धर्मायैतदधर्माय सदेतदसदित्यपि ॥ ३५२ ॥
विमुक्तये त्विदंनैतद्विमुक्तिंसंप्रयच्छति । परमार्थोऽयमत्यर्थंपरमार्थोनचाप्ययम् ॥३५३॥
कार्यमेतदकार्यंहिनैतदेतत्स्फुटंत्विदम् । दिग्वाससामयंधर्मोधर्मोऽयंबहुवाससाम् ॥३५४
इत्यनेकार्थवादांस्तुमायामोहेनतेयतः । उक्तास्ततोऽखिलादैत्याःस्वधर्मं त्याजितानृप ॥
अर्हध्वंमामकंधर्मंमायामोहेनतेयतः । उक्तास्तमाश्रिताधर्ममार्हतास्तेनतेऽभवन् ॥ ३५६॥
त्रयीमार्गंसमुत्सृज्यमायामोहेनतेऽसुराः । कारितास्तन्मयाह्यासंस्तथान्येतत्प्रबोधिताः ॥
तैरप्यन्येपरेतैश्चतैरन्योन्यैस्तथापरे । नमोऽर्हते चेति सर्वे संगमे स्थिरवादिनः ॥३५८॥
अल्पैरहोभिःसंत्यक्तास्तैर्दैत्यैःप्रायशस्त्रयी । पुनश्चरक्तांबरधृन्मायामोहोजितेक्षणः ॥३५९॥
सोऽन्यानप्यसुरान्गत्वाऊचेऽन्यन्मधुराक्षरम् । स्वर्गार्थंयदिवोवाञ्छानिर्वाणार्थायवापुनः
तदलंपशुघातादिदुष्टधर्मैर्निबोधत । विज्ञानमयमेतद्वै अशेषमधिगच्छत ॥ ३६१ ॥
बुध्यध्वं मे वचः सम्यग्बुधैरेवमिहोदितम् । जगदेतदनाधारंभ्रांतिज्ञानानुतत्परम् ॥३६२॥
रागादिदुष्टमत्यर्थंभ्राम्यतेभवसंकटे । नानाप्रकारं वचनं स तेषां मुक्तियोजितम् ॥३६३॥
तथातथाऽवददद्धर्मंतत्यजुस्ते यथा यथा । केचिद्विनिन्दां वेदानां देवानामपरेनृप ॥३६४॥
यज्ञकर्मकलापस्यतथान्येद्विजन्मनाम् । नैतद्युक्तिसहंवाक्यंहिंसाधर्माययजायते ॥३६५॥
हवींष्यनलदग्धानिफलान्यर्हंतिकोविदाः । निहतस्यपशोर्यज्ञेस्वर्गप्राप्तिर्यदीष्यते ॥ ३६६ ॥
स्वपिता यजमानेन किं वा तत्र न हन्यते । तृप्तये जायते पुंसो भुक्तमन्येन चेद्यदि ॥३६७॥
दद्याच्छ्राद्धंप्रवसतोनवहेयुः प्रवासिनः । यज्ञैरनेकैर्देवत्वमवाप्येन्द्रेण भुज्यते ॥ ३६८ ॥
शम्यादि यदिचेत्काष्ठं तद्वरं पत्रभुक्पशुः । जनाश्रद्धेयमित्येतदवगम्य तु तद्वचः ॥३६९॥
उपेक्ष्य श्रेयसे वाक्यं रोचतांयन्मयेरितम् । नह्याप्तवादानभसोनिपतंतिमहासुराः ॥३७०॥
युक्तिमद्वचनं ग्राह्यं मयान्यैश्च भवद्विधैः ।

दानवा ऊचुः ।

तत्ववादे वयं सर्वे प्रपन्नास्तव भक्तितः ॥ ३७१ ॥



कुरुष्वानुग्रहंचाद्यप्रसन्नोऽसियदिप्रभो । संभारानाहरामोऽद्यदीक्षायोग्यांश्चसर्वशः ॥
प्रसादत्तवयेनाशुमोक्षोहस्तगतोभवेत् । ततस्तानब्रवीत्सर्वान्मायामोहोऽसुरांस्तदा ३७३
प्रपन्नाःशासनंह्येतमदीयंगुरुरग्र्यधीः । दीक्षांदास्यतियुष्माकंनिदेशान्ममसत्तमः ॥ ३७४॥
एतान्दीक्षयभोब्रह्मन्वचनान्ममपुत्रकान् । गतेमोहेदानवास्तेभार्गवंवाक्यमब्रुवन् ॥ ३७५
देहिदीक्षांमहाभागसर्वसंसारमोचनीम् । तथेत्याहोशनादैत्यान्गच्छामोनर्मदामनु ॥३७६
भोभोस्त्यजतवासांसिदीक्षांकारयितास्मिवः । एवंतेदानवाभीष्मभृगुरूपेणधीमता ॥
आंगिरसेनतेतत्रकृतादिग्वाससोऽसुराः बर्हिपिच्छध्वजंतेषांगुंजिकाचारुमालिकाम् ॥
दत्वा चकार तेषां तु शिरसो लुंचनंततः । केशस्योत्पाटनंचैवपरमंधर्मसाधनम् ॥३७९॥
धनानामीश्वरोदेवोधनदःकेशलुंचनात् । सिद्धिपरमिकांप्राप्तःसदावेषस्यधारणात् ॥३८०
नित्यत्वंलभ्यतेह्येवंपुराप्राहार्हतःस्वयम् । वालोत्पाटेनदेवत्वंमानुषैर्लभ्यतेत्विह ॥ ३८१
किन्नकुर्वीततत्तस्मान्महापुण्यप्रदंयतः । मनोरथो हि देवानां लोके वैमानुषेकदा ॥३८२॥
अस्मिन्स्याद्भारतेवर्षेजन्मनः श्रावकेकुले । तपसायुञ्ज्महेऽस्मान्वैकेशोत्पाटनपूर्वकम् ॥
तीर्थंकराश्चतुर्विंशत्तथातैस्तुपुरस्कृताः । छायाकृतंफणीन्द्रेणध्यानमार्गप्रदर्शकम् ॥ ३८४
स्तुवन्तंमंत्रवादेनस्वर्गोहस्तगतोऽर्हतम् । मोक्षोवाभविता नूनंविचारःकोऽत्रकथ्यते ॥
कदास्यामर्षयोभूत्वासूर्याग्निसमतेजसः । जप्त्वाविरागिणश्चैवमनुपंचांगकंतथा ॥३८६
तथातपस्यतांमृत्युंगतानांकालपर्ययात् । पाषाणेनशिरोभग्नंभवतेपुण्यकर्मणाम् ॥ ३८७॥
अरण्येनिर्जनेवासःकदावैभविताहिनः । कर्णजप्यंश्रावकाश्चकरिष्यंतिसमाहिताः ॥ ३८८
भोभोरूपेनगंतव्यंमोक्षमार्गोयतोभवान् । लब्धानियानिस्थानानिभूयोवृत्तिकराणि च ॥
त्याज्यानितेनचैतानिसत्यमेववचोहि नः । अस्मदीयेन तपसा नियमैर्विविधैस्तथा ॥
व्रजध्वंचोत्तमंस्थानंमोक्षमार्गंचयंबुधाः विन्दन्ति भक्तिभावेन तपोयुक्तास्तपस्विनः ॥
अक्षेषु निग्रहो यत्रदयाभूतेषुसर्वदा । तत्तपोधर्ममित्युक्तं सर्वाचान्या विडम्बना ॥३९२॥
ज्ञात्वैतद्व्रतासाध्यंगंतव्यंपरंपदम् । यान्तितीर्थंकरायातायांगतियोगिनोगताः ॥ ३९३ ॥
एवंवेदेवताः पूर्वं विद्याधरामहोरगाः । मनोरथाभिलाषांस्तेचिंतयंतोदिवानिशम् ॥ ३९४
यद्येपणावैयुष्माकंसंसारविरतौकृता । परित्यजध्वंदाराणिस्वर्गमार्गार्गलानिच ॥ ३९५॥

यस्यां योनौपितायातस्तांयोनिंसेवसेकथम् । आत्ममांसोपमंमांसंकथंखादंति तत्वः ॥
ततस्तेदानवाभीष्मऊचुःसर्वे गुरुं वचः । दीक्षस्वनोमहाभागभ्रूणकानग्रतः स्थितान् ॥
तथाकृत्वासतानाहसमयेनपुरोहितः । प्रणामोनान्यदेवेषुकर्तव्योवःकदाचन ॥ ३९८ ॥
एकस्थानेयदाभक्तंभोक्तव्यंकरसंपुटे । तत्रस्थानेस्थितंतोयंकेशकीटविवर्जितम् ॥ ३९९ ॥
तुल्यं प्रियाप्रियं कार्यं नान्यद्दृष्टिहतं क्वचित् । भोक्तव्यमेतेनविभो आचारेण तथा कुरु
भवध्वं सहितायूयं ते तथा मोक्षभागिनः । एवमुक्त्वासनियमान्कृत्वातान्दृढपुंगवान् ॥
जगामधिषणो राजन्देवलोकं दिवौकसाम् । आचचक्षे स तत्सर्वं दानवानां च कारणम् ।
ततस्तेत्वसुराजग्मुर्नर्मदाममितोवसन् । दृष्ट्वातान्दानवांस्तत्र प्रह्लादेन विनाकृतान् ॥४०३॥
देवराजस्ततो हृष्टो नमुचिंप्राहवैवचः । हिरण्याक्षं यज्ञहनं धर्मघ्नं वेदनिंदकम् ॥४०४॥
राक्षसं क्रूरकर्माणं प्रघसंविघसंतथा । मुचिंचैव तथा बाणं विरोचनमथापि वा ॥
महिषाक्षं बाष्कलं च प्रचण्डंचंडकंतथा । रोचमानं तथात्युग्रं सुषेणं दानवोत्तमम् ॥
एतान्दृष्ट्वा तथा चान्यान्दानवेन्द्रानथाब्रवीत् ।

इन्द्र उवाच ।

दानवेंद्राः पुराजाताः कृतं राज्यं त्रिविष्टपे ॥ ४०७ ॥
इदानीं कथमेवेदं व्रतं वेदविलोपकम् । भवद्भिः कर्तुमारब्धं नग्नमुंडि कमंडलु ॥४०८॥
मयूरध्वजधारित्वं कथं चैवेह तिष्ठथ ।

दानवा ऊचुः ।

त्यक्तः सर्वासुरभाव ऋषिधर्मे वयं स्थिताः ॥ ४०९ ॥
धर्मवृद्धिकरं कर्म चरामः सर्वजंतुषु । त्रैलोक्यराज्यमखिलं भुंक्ष्व शक्र व्रजस्व च ॥
इत्येति चोक्त्वा मघवा पुनर्यातस्त्रिविष्टपम् । एवंते मोहिताः सर्वे भीष्म देवपुरोहितैः ॥
नर्मदा सरितं प्राप्य स्थिता दानवसत्तमाः । ज्ञात्वा शुक्रेणते सर्वे वृत्तांतमनुबोधिताः ॥
तदा त्रैलोक्यहरणे चक्रुः क्रूरां पुनर्मतिम् ॥४१३॥

इति श्री पद्मपुराणे प्रथमे सृष्टिखण्डे अवतारचरितं नाम त्रयोदशोऽध्यायः